प्रकृति प्रेमी आज की पहचान बने।

धरती मां की जान बचे, शान बढ़े।।

नेशनल नेचर नेटवर्क

प्रगति से प्रकृति तक

रामबाबू तिवारी
अनीता सिंह

निवेदक

मंगल भूमि फाउंडेशन, बांदा

सहयोग

हेस्को, देहरादून

प्रस्तावना

नेशनल नेचर नेटवर्क की शुरुआत प्रगति से प्रकृति पथ यात्रा 2 अक्टूबर 2022 को आदरणीय डॉ अनिल प्रकाश जोशी जी की अगुवाई में निकाली गई थी। उस यात्रा के उपरांत यह तय किया गया कि माटी, पानी, हवा, प्रकृति सुरक्षित करने हेतु देश में एक ऐसा मंच बनाया जाए जो अलग-अलग हिस्सों में देश में प्रकृति पर्यावरण के लिए कार्य कर सकें और उनको एक साथ लाकर एक साथ आवाज उठाकर प्रकृति की रक्षा करने हेतु आगे आए। 27 जनवरी 2023 को नेचर नेटवर्क की पहली ऑनलाइन बैठक में गुरु जी कहा कि

नेशनल नेचर नेटवर्क की आवश्यकता क्यों है?

इसका स्वरूप क्या होगा?

नेचर नेटवर्क की कार्य शैली क्या होगी?

ढांचा व दायित्व की रूपरेखा क्या हो सकती है?

इन मुद्दों पर चर्चा हुई और इसकी शुरुआत हुई। भौतिक रूप से 8 फरवरी 2023 में हेस्को संस्थान देहरादून में नेशनल नेचर नेटवर्क की राष्ट्रीय बैठक में निर्णय लिया गया कि भौतिक रूप से 8 फरवरी 2023 में हेस्को संस्थान देहरादून में नेशनल नेचर नेटवर्क की बैठक कर उसकी शुरुवात हो गई जिसमे मंगल भूमि फाउंडेशन को उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश व बुन्देलखण्ड में नेचर नेटवर्क की गठन व संपर्क की जिम्मेदारी मिली। मंगल भूमि फाउंडेशन इसकी शुरुआत ऑनलाइन और ऑफलाइन बैठक समय-समय पर करता है और प्रकृति पर्यावरण से जुड़े हुए लोगों को जोड़ने का प्रयास करता है। अब तक सक्रिय रूप से नेचर नेटवर्क में 350 लोगों को जोड़ा जा चुका है। अब तक पांच बड़ी बैठकें भी कराई गई है।

मंगल भूमि फाउंडेशन

आभार

इस नेचर नेटवर्क के संरक्षक व अगुवा डॉ अनिल प्रकाश जोशी जी के बगैर इसकी कल्पना करना संभव नहीं था इसीलिए इसका पूरा श्रेय मेरे गुरु जी डॉ अनिल प्रकाश जोशी को जाता है। हेस्को संस्थान की डॉ किरण नेगी जी ने लगातार नेचर नेटवर्क में लोगों को जोड़ने हेतु मार्गदर्शन देती रही और प्रेरित करती रही। मेरी बड़ी बहन सामान हिमानी जी ने नेचर नेटवर्क हेतु लगातार सहयोग किया। पंकज मालवीय जी बीच- बीच अपना अनुभव देते रहे। टेक्निकल सपोर्ट शालिनी, पारुल, सुमाकर, रजनीश अवस्थी ने किया।

रामबाबू तिवारी

मंगल भूमि फाउंडेशन

मंगल भूमि फाउंडेशन

अनुक्रम

1. राष्ट्रीय कोर टीम की स्थापना..1
2. सामाजिक संस्थाओं की भूमिका...3
3. हिमालय दिवस पर परिचर्चा...4
4. प्रकृति नमन दिवस की रूपरेखा...7
5. बसंत पंचमी पर प्रकृति नमन दिवस की परिचर्चा..8

मंगल भूमि फाउंडेशन

1. राष्ट्रीय कोर टीम की स्थापना:

8 फरवरी 2023- हेस्को संस्थान, देहरादून में नेचर नेटवर्क की राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे नेशनल नेचर नेटवर्क की राष्ट्रीय कार्यशाला में नेचर नेटवर्क के अगुवा डॉ अनिल प्रकाश जोशी जी की अगुवाई में बिहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश, बुंदेलखंड व उत्तराखंड के प्रमुख 40 लोग रहे है। डॉ अनिल प्रकाश जोशी जी ने कहा कि वर्तमान स्थिति में विकास के साथ ही साथ हमें अपनी प्रकृति को भी संरक्षित करना होगा। 2 अक्टूबर 2022 से प्रगति से प्रकृति पथ यात्रा का नेतृत्व इसी उद्देश्य हेतु प्रगति की राजधानी मुंबई से प्रकृति की राजधानी देहरादून तक साइकिल के माध्यम से यात्रा की गई। देश में एक नेचर नेटवर्क बनाना अति आवश्यक है। इस नेचर नेटवर्क में देश भर में प्रकृति/पर्यावरण (माटी, पानी, हवा) में कार्य कर रहे कार्यकर्ताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, बौद्धिक जन, युवा, मातृ शक्ति, पत्रकार बंधु, किसान भाई, आदि को जोड़ने हेतु प्रयास किया जाएगा और यह एक ऐसा प्लेटफॉर्म होगा जिसमें सभी को प्रकृति को सुरक्षित करने हेतु एक दूसरे का सहयोग कर सकें एवं हमारी माटी,पानी, हवा सुरक्षित एवं स्वस्थ रहे। पानी रे पानी के संस्थापक बिहार वासी पंकज मालवीय जी ने कहा कि नेचर नेटवर्क आज देश की सबसे बड़ी जरूरत है। आदरणीय डॉ अनिल प्रकाश जोशी जी के नेतृत्व में हम सब एक साथ हो और एक साथ मिलकर माटी, पानी ,हवा को समृद्ध करने हेतु इस नेचर नेटवर्क के माध्यम से कार्य करेंगे।

मंगल भूमि फाउंडेशन व बुंदेलखंड वासी रामबाबू तिवारी ने कहा कि वर्तमान समय में बढ़ती आबादी, भौतिकतावादी समाज, शहरीकरण, वनों का कटाव, अत्यधिक उत्खनन, कृषि में बढ़ता पेस्टिसाइड, फर्टिलाइजर प्रयोग आदि के चलते जलवायु परिवर्तन का प्रभाव दिखने लगा व प्राकृतिक आपदाएं दिन प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। इन प्राकृतिक आपदाओं से निपटने हेतु अपने क्षेत्र में अलग-अलग मंच से कार्य कर रहे प्रकृति प्रेमियों को एक साथ आना होगा। यह हम लोगों के लिए सौभाग्य की बात है कि डॉ अनिल प्रकाश जोशी जैसे प्रख्यात पर्यावरणविद् के अगुवाई में हम सब एक मंच पर आ रहे हैं और अपने-अपने क्षेत्र पर माटी, पानी, हवा व प्रकृति के लिए कार्य करेंगे। इस मंच के माध्यम से एक संबल और ताकत मिलेगी जिससे प्रकृति संरक्षण का कार्य और समृद्ध होगा। कार्यक्रम में प्रकृति, पर्यावरण, कृषि, ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण आदि क्षेत्र में कार्य कर रही संस्थान के प्रतिनिधि मौजूद रहे। इसमें प्रमुख रूप से हेस्को संस्थान; मंगल भूमि फाउंडेशन, बुंदेलखंड; पानी रे पानी संस्था, आपका आंचल, इनफार्मेशन एण्ड रुरल डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट, बिहार; प्रवाह संस्थान, झारखण्ड; प्रथा संस्थान,प्रयागराज, उत्तर प्रदेश; केदार जन विकास समिति, उत्तरकाशी, उत्तराखंड।

मंगल भूमि फाउंडेशन

2. सामाजिक संस्थाओं की भूमिका:

1 मार्च 2023 में नेशनल नेचर नेटवर्क का आयोजन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से हुआ। इस अवसर पर मुख्य रूप से डॉ अनिल प्रकाश जोशी जी (प्रख्यात पर्यावरणविद्, पद्मश्री पद्मभूषण अवार्ड से सम्मानित) जी रहे जिन्होंने कहा कि देश भर की सामाजिक संस्थाओं को एक साथ एक मंच में नेचर नेटवर्क के माध्यम से जोड़ा जाए और पर्यावरण की बात करें क्योंकि यह मुद्दा वैश्विक हो गया है। इसमें हम सबको एकजुट आना होगा एवं जो सामाजिक संस्थाएं अपने स्तर से रचनात्मक और सकारात्मक कार्य कर रही हैं उनका सहयोग भी करना होगा। ऑनलाइन बैठक में श्री अंशु गुप्ता जी (रेमन मैग्सेसे अवार्ड विजेता,गूँज संस्था के संस्थापक) ने कहा कि डॉ अनिल प्रकाश जोशी की अगुवाई में हम लोग नेचर नेटवर्क के लिए तैयार है। इस नेटवर्क में संस्थाओं के साथ युवाओं की सहभागिता भी अति आवश्यक है क्योंकि आने वाली पीढ़ी का नेतृत्व हमारे युवा ही करेंगे।

नेचर नेटवर्क की ऑनलाइन बैठक में मंगल भूमि फाउंडेशन के अध्यक्ष रामबाबू तिवारी ने कहा कि आज वर्तमान गांव टूट रहें हैं, परंपरागत खेती मोटे अनाजों से दूर हो गए है, जिससे कृषि में जल का अंधाधुंध प्रयोग हो भी हो रहा है। कृषि में संकट बढ़ रहा है। गांव में समृद्धि लाने हेतु कृषि में समृद्धि लाना होगा। इस नेचर नेटवर्क के माध्यम से गांव-गांव जाकर किसान और मजदूर वर्ग को जोड़ना होगा और उनकी तरक्की खुशहाली हेतु भी प्रयास करना होगा। बैठक में श्री पंकज मालवीय जी, बिहार, डॉ जगदीश चौधरी जी फरीदाबाद, हरियाणा, डॉ संजय गुप्ता जी मध्य प्रदेश, डॉ रीमा पंत जी, उत्तराखंड, कामिनी जी, झारखंड समेत भारत भर के सैकड़ों पर्यावरण प्रेमी मौजूद रहें।

मंगल भूमि फाउंडेशन

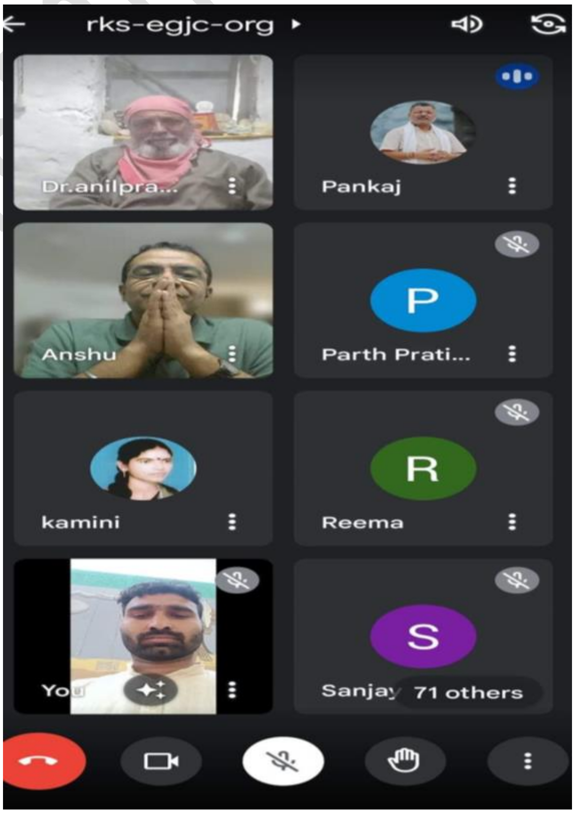

3. हिमालय दिवस पर परिचर्चा:

6 सितंबर 2023 को 14 वें हिमालय दिवस को लेकर चर्चा हुई जो हिमालय और आपदा थीम पर मनाया जा रहा है। इसके उपलक्ष्य में मंगल भूमि फाउंडेशन और हिमालय पर्यावरण अध्ययन और संरक्षण संगठन (हेस्को) द्वारा **"दांव पर हिमालय का अस्तित्व: आपदाओं और विकास पर एक परिचर्चा"** विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के तौर पर पद्म श्री व पद्मभूषण से सम्मानित प्रख्यात पर्यावरणविद व हिमालय पुत्र डॉ० अनिल प्रकाश जोशी जी रहें।

उन्होंने पर्यवारण के क्षेत्र में हिमालय से जुड़े अपने अनुभवों को साझा करते हुए हिमालय के पर्यावरणीय विनाश के लिए वर्तमान विकास और लालच को दोषी ठहराया और हिमालय में आने वाली आपदाओं के महत्वपूर्ण बिंदुओं की ओर इशारा करते हुए अपनी बात रखी। जोशी जी ने अपने वक्तव्य में महत्वपूर्ण वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं, भौतिक विकास एवं जलवायु परिवर्तन, मानव निर्मित आपदाएं, हिमालय प्रदेश की वर्तमान दशायें और भविष्य की दिशा, हिमालय की प्राकृतिक भौगोलिक, धार्मिक - सांस्कृतिक महत्व, हिमालय की समस्याएं, संरचनात्मक व प्रकार्यात्मक मॉडल, लोगों के विलासितापूर्ण जीवन से उत्पन्न दुष्प्रभाव हिमालय में वास करने वालों लोगों से नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। डॉ सुभाष कुमार ने कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ रेवा सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। नेचर नेटवर्क के माध्यम से अलग अलग विषय में चर्चा-परिचर्चा हुई। इस बार नेचर नेटवर्क की बैठक में आगामी 9 सितंबर को हिमालय दिवस की तैयारी को लेकर भी चर्चा की गई। कार्यक्रम में डॉ अनिल सिंह, हरिशंकर

मंगल भूमि फाउंडेशन

जी, डॉ संजय व गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान के MBA R.D (रुरल डेवलपमेंट) के छात्र-छात्राओं, पूर्वांचल विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने सहभागिता दर्ज की।

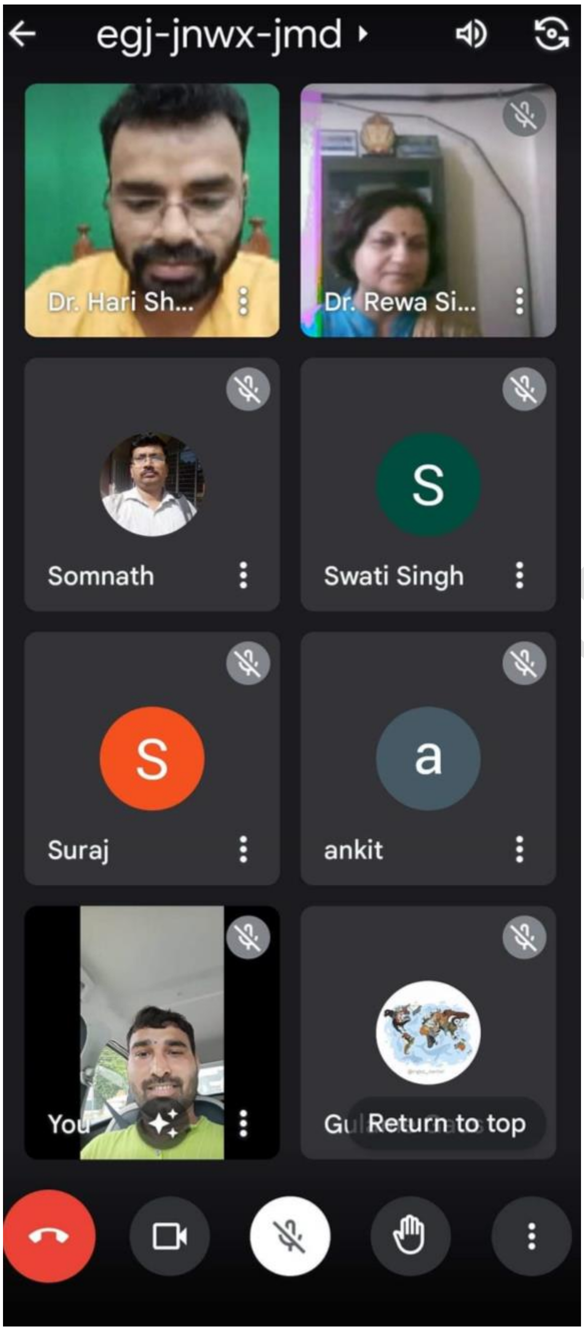

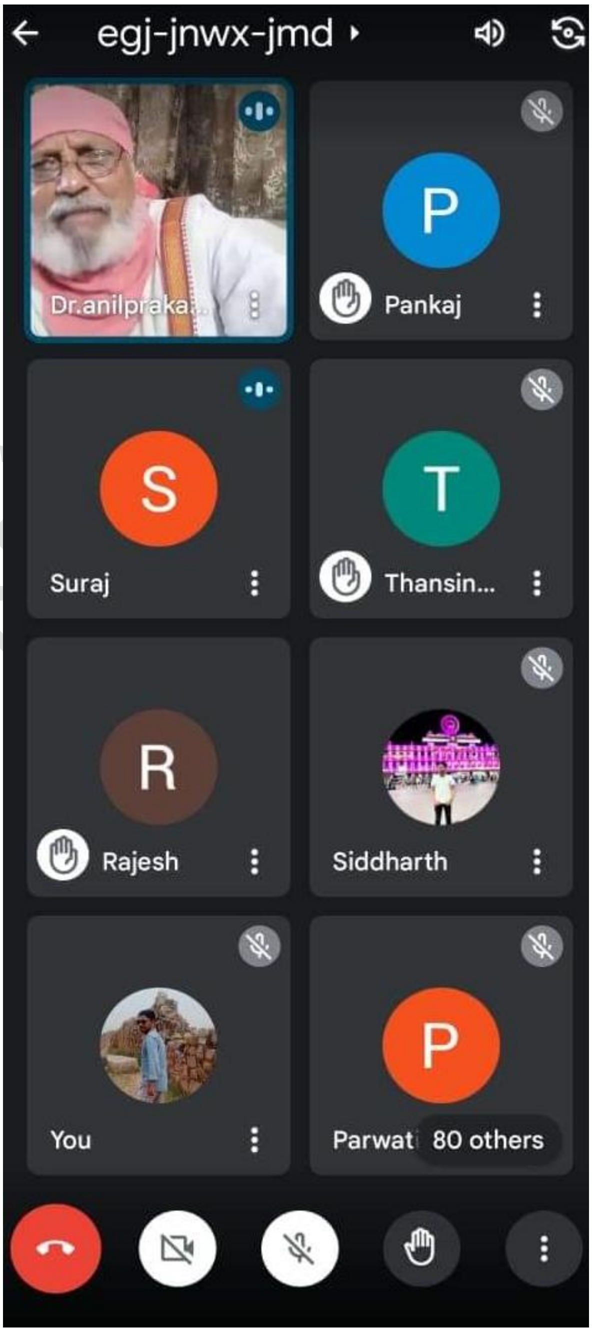

'पर्यावरणीय विनाश के लिए वर्तमान विकास व लालच दोषी'

जागरण संवाददाता, बांदा : इस वर्ष 14वें हिमालय दिवस को हिमालय और आपदा थीम पर मनाया जा रहा है। इसके उपलक्ष्य में मंगल भूमि फाउंडेशन और हिमालय पर्यावरण अध्ययन व संरक्षण संगठन की ओर से 'दांव पर हिमालय का अस्तित्व : आपदाओं और विकास पर एक परिचर्चा' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के तौर पर पद्मश्री व पद्मभूषण से सम्मानित प्रख्यात पर्यावरणविद व हिमालय पुत्र डा.अनिल प्रकाश जोशी रहे। उन्होंने पर्यवारण के क्षेत्र में हिमालय से जुड़े अपने अनुभवों को साझा करते हुए हिमालय के पर्यावरणीय विनाश के लिए वर्तमान विकास और लालच को दोषी ठहराया। उन्होंने हिमालय में आने वाली आपदाओं के महत्वपूर्ण बिंदुओं की ओर इशारा करते हुए अपनी बात रखी।

पर्यावरणविद डा. अनिल प्रकाश जोशी • सौजन्य रामबाबू

NORTHERN INDIA PATRIKA

EDITION PRICE. RS. 1.50 VOL. 65 NO. 237 MORNING EDITION, PRAYAGRAJ | FRIDAY, 08 SEPTEMBER, 2023 | PAGE-12

"Himalayan survival at stake: A discussion on disasters and development": Webinar organized

अरविन्द श्रीवास्तव8423661999

Banda: This year the 14th Himalaya Day is being celebrated on the theme of Himalayas and disaster. To commemorate this, a national webinar was organized by Mangal Bhoomi Foundation and Organization for Himalayan Environmental Studies and Conservation on the topic "Himalayan Existence at Stake: A Symposium on Disasters and Development". Renowned environmentalist and son of Himalaya, Dr. Anil Prakash Joshi, honored with Padma Shri and Padma Bhushan, was the keynote speaker in this program. While sharing his experiences related to the Himalayas in the field of environment, he blamed the current development and greed for the environmental destruction of the Himalayas and made his point by pointing out the important points of the upcoming disasters in the Himalayas. In his statement, Joshi ji discussed important global economies, physical development and climate change, man-made disasters, current conditions and future direction of the Himalayan region, natural geographical, religious-cultural significance of the Himalayas, problems of the Himalayas, structural and functional models, people. The ill effects arising from the luxurious life of the people are falling on the social life of the people living in the Himalayas. He underlined the public participation and awareness of youth for Himalayan conservation. America, China and India contribute to the three largest and aggressive economies of the world, hence the Himalayan based economy of India and China is destroying the local ecology. For this we can blame the development plans. The rising temperature on earth is having a direct impact on the climate change of the Himalayas. This time the disaster that occurred in Himachal and the previous disasters, the changing global climate change has brought about a major change in the chronology of the Himalayas. most of the Himalayas The beneficiaries are not local but include the population of the entire Indian subcontinent. Rambabu Tiwari, who is conducting the program, said that under this online program, we the people of the land will have to come forward in the conservation and promotion of the Himalayas which are currently crumbling, otherwise there will definitely be a cataclysm on the earth. The role may be important. To support its conservation, we will have to start from our home, we will have to reduce the use of material waste items. Use only necessary items. Natural farming will have to be promoted; youth will have to go towards the prosperity and prosperity of the villages with the slogan 'Let's go to the village'. We will have to move towards nature-centric development. Dr. Harishankar ji presented the outline of the program and the importance of the program. Dr. Subhash Kumar said that environment is the biggest issue in the world today as climate change is increasing. To control this climate change, we have to connect with nature and respect nature.

Renowned environmentalist and son of Himalaya, Dr. Anil Prakash Joshi, honored with Padma Shri and Padma Bhushan, main speaker in prog

4. प्रकृति नमन दिवस की रूपरेखा:

14 जनवरी 2024 को वर्चुअल बैठक आयोजित की गई। इस बैठक का उद्देश्य 14 फरवरी बसंत पंचमी के दिन तेज ब्रह्म प्रकृति नमन दिवस मनाने के लिए आयोजित की गई। बैठक में नेशनल नेचर नेटवर्क के अगुवा डॉ अनिल प्रकाश जोशी जी ने कहा कि प्रत्येक बसंत पंचमी में देश में प्रकृति का आभार प्रकट करे। नेशनल नेचर नेटवर्क के माध्यम से देश में अलग अलग जगह में प्रकृति का आभार प्रकट करने हेतु प्रकृति नमन दिवस आयोजित किया जाएगा। प्रकृति नमन दिवस किन-किन जगहों में होगा; क्या आयोजन होगा? उसकी रूपरेखा उत्तर प्रदेश और बुन्देलखण्ड के लोगो से मांगी गई। इस बैठक में महोबा से डॉ धर्मेंद्र मिश्रा जी ने अवगत कराया कि महोबा के काकुन गांव में विधवत प्रकृति नमन दिवस मनाया जायेगा। प्रयागराज से रजनीकांत श्रीवास्तव जी ने अवगत कराया कि प्रयागराज में संगम नोज व स्लम क्षेत्र में प्रकृति नमन दिवस मनाया जायेगा। बांदा से शाहनवाज खान ने बताया कि बांदा के बदौसा में छात्रों के बीच व ग्रामीण क्षेत्र में किसानों के बीच प्रकृति का आभार प्रकट कर प्रकृति नमन दिवस मनाया जायेगा। इसी प्रकार लोगो ने अपने-अपने क्षेत्र की रूप रेखा बताई।

मंगल भूमि फाउंडेशन के रामबाबू जी ने सबसे अपील की कि यह देश भर में पहली बार प्रकृति नमन दिवस का आयोजन होने जा रहा है और इसका प्रचार प्रसार भी अलग-अलग माध्यम से करना होगा। इस कार्यक्रम का एक पत्रक रहेगा और इस कार्यक्रम में एक शपथ भी दिलाई जाएगी। इस दिन प्रकृति से संबंधित कार्य भी करे व प्रकृति का पूजन भी; नदियों, तालाबों, पेड़ों आदि का पूजन व नदी तालाब की साफ सफाई/श्रम साधना करें और बृहदांत्र पौधा रोपण करने का प्रयास करें आदि।

इस बैठक में पवन जी ऋषिकेश, यशस्वी जी मिर्जापुर, नीरज जी, डॉ पीयूष त्रिपाठी जी बुलंद शहर, मुकेश कुमार बूंदी, राजस्थान, डॉ मोहम्मद आनंद पटेल भोपाल समेत दर्जनों प्रमुख कार्यकर्ता मौजूद रहे।

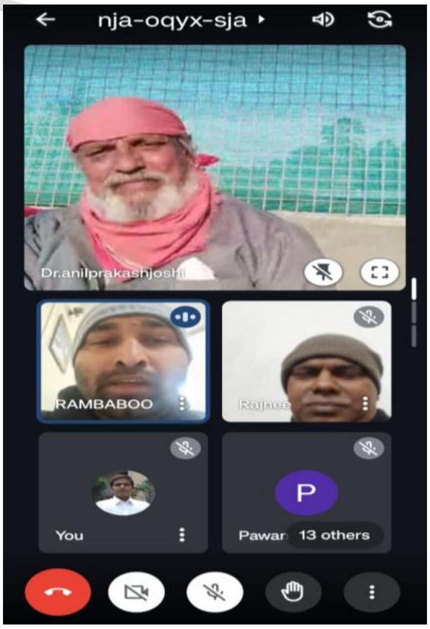

मंगल भूमि फाउंडेशन

5. बसंत पंचमी पर प्रकृति नमन दिवस की परिचर्चा:

27 जनवरी 2024 की बैठक में नेशनल नेचर नेटवर्क की केंद्रीय टीम से देश भर में वसंत पंचमी ,प्रकृति नमन दिवस बनाने हेतु एक पत्रक निकला। इस पत्रक में डॉ अनिल प्रकाश जोशी जी ने अपील की के इस बसंत पंचमी को लोग प्रकृति नमन दिवस के रूप में मनाए और प्रकृति को अपने जीवन का आधार बनाएं।

उन्होंने प्रकृति नमन दिवस मनाने हेतु लोगो से कहा कि

"प्रकृति सर्वोपरि है और सब इसमें ही समाहित है। प्रकृति सब में है और प्रभु और प्रकृति का सानिध्य भी है। पृथ्वी वन जल पर्यावरण जैसे दिवस इन विषयों पर केंद्रित रहते हैं परंतु इन सब के साथ हम प्रकृति को लेकर कभी चिंतन नहीं करते। प्रकृति पृथ्वी तक ही सीमित नहीं बल्कि यह ब्रह्मांड से भी आगे है और हमारे सोच की सीमाओं से भी ऊपर है। अपने देश में प्रकृति की समझ कुछ बसंत पंचमी में दिखाई देती है जब भोजन वस्त्र मौसम सब बदलते हैं इसलिए आवश्यक हो जाता है कि दुनिया को देश का यह भी परिचय प्रकृति नमन के रूप में दिया जाना चाहिए जिसमें इसे प्रकृति दिवस के रूप में अगर नमन करेंगे तो इसकी समझ व्यापक होगी और ये दिन मात्र एक पर्व ही नहीं होगा बल्कि सब के समझने का एक कारण भी बनेगा। इस 14 फरवरी को वसंत पंचमी में प्रकृति को भी नमन कर प्रकृति के उपकारों को प्रणाम करें।"

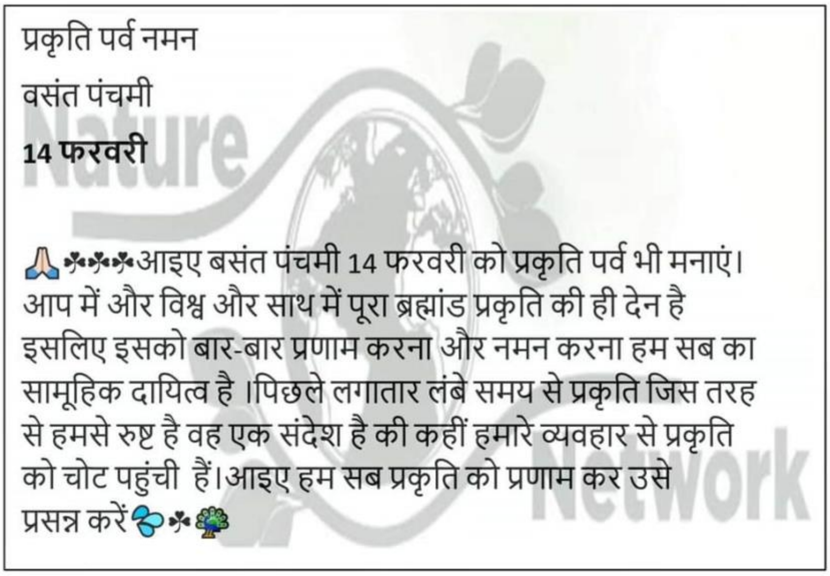

वसंत पंचमी ,प्रकृति नमन दिवस

Nature Network

प्रकृति सर्वोपरि है और सब इसमें ही समाहित है। प्रकृति सब में है और प्रभु और प्रकृति का सानिध्य भी है। पृथ्वी वन जल पर्यावरण जैसे दिवस इन विषयों पर केंद्रित रहते हैं परंतु इन सब के साथ हम प्रकृति को लेकर कभी चिंतन नहीं करते। प्रकृति पृथ्वी तक ही सीमित नहीं बल्कि यह ब्रह्मांड से भी आगे है और हमारे सोच की सीमाओं से भी ऊपर है । अपने देश में प्रकृति की समझ कुछ बसंत पंचमी में दिखाई देती है जब भोजन वस्त्र मौसम सब बदलते हैं इसलिए आवश्यक हो जाता है कि दुनिया को देश का यह भी परिचय प्रकृति नमन के रूप में दिया जाना चाहिए जिसमें इसे प्रकृति दिवस के रूप में अगर नमन करेंगे तो इसकी समझ व्यापक होगी और ये दिन मात्र एक पर्व ही नहीं होगा बल्कि सब के समझने का एक कारण भी बनेगा। इस 14 फरवरी को वसंत पंचमी में प्रकृति को भी नमन कर प्रकृति के उपकारों को प्रणाम करें।

धन्यवाद

मंगल भूमि फाउंडेशन